

आत्मन् m. Uṅ. 4, 154. 1) *Hauch*: आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत RV. 10, 92, 13. आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छन्तम् 34, 7. आत्मा ते वातो रज्ज् आ नवीनात् 7, 87, 2. आत्मा देवानां भुवनस्य गभो यथावशं चरति देव एषः (वातः) 10, 168, 4. — 2) *Seele, als Princip von Leben und Empfindung*, im nächsten Gegensatz zum Leibe AK. 1, 1, 4, 7. 3, 4, 35. 209. TRIK. 1, 1, 114. H. 1366. an. 2, 258. MED. n. 38. मा त्वा तपत्प्रिय आत्मापियत्तं मा स्वधित्तिस्त्वन्व् आ तिष्ठिपते RV. 1, 162, 20. यत्तं आत्मानं तन्वां घोरमस्ति AV. 1, 18, 3. 7, 57, 1. समात्मा तनुवा मम TS 1, 1, 10, 12. भूय्या असुरसंगात्मा क्व स्वित् RV. 1, 164, 4. सूर्यं चतुर्गच्छतु वातमात्मा 10, 16, 3. 107, 7. 8, 3, 24. शतात्मन् 1, 149, 3. सूर्यो मे चतुर्वीर्यैः प्राणोऽर्त्तिरन्तमात्मा पृथिवी शरीरम् AV. 5, 9, 7. 5, 7. 6, 53, 2. 11, 8, 31. VS. 11, 20. TS. 2, 3, 11, 1. CAT. Br. 4, 6, 1, 1. 14, 3, 2, 5. Bildlich: सूर्य आत्मा जगतस्तस्युपेक्ष RV. 1, 113, 1. 7, 101, 7. आत्मा यज्ञस्य (सुतः) 9, 6, 8. 2, 10. CAT. Br. 10, 4, 2, 3. भूतभूतं च भूतस्यो ममात्मा भूतभावः BHAG. 9, 5. किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत् HIT. I, 131. u. s. w. — 3) *das Selbst, die eigene Person*; häufig für das pron. refl.: बलं दधान आत्मनि RV. 9, 113, 1. यद्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते 10, 163, 5. येन देवा पवित्रैणात्मानं पुनते सदा SV. II, 5, 2, 5. 5. आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम् AV. 9, 5, 30. आत्मना प्रजया 5, 29, 6. 3, 15, 7. 29, 8. 4, 12, 2. 20, 5. सर्वेषु एव तदेव ताद्यो यजमान आत्मानं निष्क्रीणीति AIR. Br. 2, 3. 6, 35. कथं नु पुनरात्मानमाप्याययेय CAT. Br. 3, 9, 1, 3. स त्रेधात्मानं व्यकुरुत 10, 6, 5, 3. आत्मा वै पुत्रनामासि 14, 9, 4, 26. नेपस्पृशेत्पृथिव्यात्मानो तेन KĀTJ. ÇA. 2, 6, 14. loc. आत्मन् mit धा oder करू in sich aufnehmen, sich aneignen TS. 5, 1, 9, 6. CAT. Br. 3, 1, 2, 27. 2, 5, 2, 4. 4, 5, 4, 5. 1, 8, 1, 12. 3, 1, 4, 6. 5, 2, 4, 2. — यादृशो ऽस्य भवेदात्मा — तद्यात्मानं निवेदयेत् M. 4, 254. एतावानेव पुरुषो यज्ञायात्मा प्रजति ह् 9, 45, 130. 10, 28. आत्मेव ह्यात्मनः साती 8, 84. एवमात्मा पिता माता अश्रूः अश्रुर एव च । भर्तुः कुलं च सावित्र्या सर्वं कृच्छात्समुद्भूतम् SĀV. 7, 14. BRĀHMAN. 3, 11. आत्मैव तु नलं वेत्ति (den Nala kennt nur sein Selbst) या चास्य तदनन्तरा N. 22, 16. मात्रापि आत्मा व्यापादितः auch die Mutter brachte sich selbst um's Leben VET. 33, 10. न शोचाम्यहमात्मानम् N. 11, 11. 12, 64. BRĀHMAN. 1, 32. ÇĀK. 19, 1. 32, 12. 66, 18. दर्शयात्मानम् N. 11, 8. आत्मानं सततं रतेत् M. 7, 213. 170. N. 9, 17. R. 1, 1, 74. ÇĀK. 23, 4. पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमेह् 7, 20. उभयोः सदृशविनिमयादात्मानं वञ्चितं मन्ये MĀLAV. 50. आत्मानमवधूतं ते (nom. pl.) विज्ञाय R. 1, 66, 22. RAGH. 10, 61. आत्मनैव सकृद्येन सुखार्थी विचरेदिक् M. 6, 49. 7, 46. N. 2, 7. RAGH. 3, 35. आत्मना विपुञ्ज् seines Lebens verlustig gehen M. 7, 46. उद्वहृतात्मनश्चैव (die Erklärer: आत्मनः = परमात्मनः, aber nur insofern, als von Brahman's Selbst die Rede ist) मनः सदसदात्मकम् M. 1, 14. नेमं तथाशुशोचामि जीवितनपमात्मनः DAÇ. 1, 29. मा विद्धि वयस्यं पितुरात्मनः R. 3, 20, 2. RAGH. 1, 79. 37. विदध्याद्धितमात्मनः M. 7, 57. 76. N. 20, 31. R. 1, 7, 17. तं पुत्रमात्मनः स्पृष्ट्वा — निपेततुः 2, 64, 28. जटाः कृत्वात्मनः सर्वे MBh. 1, 6086. तत्राणान्देहि नः पुत्र कुशलं च तवात्मनि KATHĀS. 18, 275. शेषमात्मनि युञ्जीत M. 6, 12, 25. 38. RAGH. 2, 41. न शशाकात्मनात्मानमियं धारयितुं धरा MBh. 1, 2485. N. 6, 11. गोपायति कुलस्त्रिय आत्मानमात्मना 18, 8. M. 9, 12. आत्मन्यात्मानमाधाय MBh. 3, 10966. ऋतुपर्णस्य वै काममात्मार्यं च कराम्यहम् N. 19, 8. यात्रेव न ज्ञानाति कश्चिदर्थमिमं नरः । तात्रेव मया सार्धमात्मस्यं कुरु शासनम् ॥ R. 2, 21, 8. भर्तारमात्मसदृशं सुकृतेर्गता लम् ÇĀK. 88. 98, 9. RAGH.

1, 88. तेभ्याम् — परित्यजेन्नृपो भूमिमात्मार्यम् M. 7, 212. ततः स्वात्मविनादाय — सा जगाद् KATHĀS. 13, 52. यामेधात्मविस्मृष्टेषु — अमोघाः प्रतिगृह्णन्तौ — आशिषः RAGH. 1, 44. आत्मनिन्दात्मपूजा च परनिन्दा परस्त्वः MBh. 2, 1542. आत्मपरवबोध ein gegenseitiges Erkennen RAGH. 7, 38. Als Regel kann man aufstellen, dass आत्मन् wie das gerund. auf das logische Subject, die in Wirklichkeit thätig gedachte Person, selbst wenn sie zu ergänzen ist, bezogen werden muss: अस्वत्तन्नाः स्त्रियः कार्योः पुरुषैः स्वैर्दिवानिशम् । विषयेषु च सज्जह्यः संस्थाप्या आत्मनो (d. i. पुरुषाणां) वशे ॥ M. 9, 2. संरोपिते ऽप्यात्मनि (d. i. मयि) धर्मपत्नी त्यक्त्वा मया Ç. k. 151. अस्मान्साधु विचिन्त्य संयमधानाञ्चैःकुलं चात्मनः (d. i. तव) — सामान्यप्रतिपूर्वकमियं दोरेषु दृश्या त्वया 92. भार्या पुत्रो ऽथ दुःखिता सर्वमात्मार्यमिष्यते (आत्मन् ist auf das zu इष्यते zu ergänzende logische Subject zu beziehen) BRĀHMAN. 2, 3. Bisweilen ist आत्मन् auf die zunächst stehende Person zu beziehen, wenn diese auch in einem untergeordneten Verhältniss zum grammatischen Subject steht: संप्रेक्षमाणा पुत्रं ते नानुब्रूयामिवात्मनः (d. i. ते) BRĀHMAN. 2, 18. ज्ञास्यस्यथ समागम्य मयात्मानं (d. i. मी) बलाधिकम् Hip. 4, 14. Der instr. आत्मना wird mit einem num. ordin. componirt; eine solche Zusammensetzung entspricht dem deutschen selbender, selbdritt u. s. w. P. 6, 3, 6 (ursprünglich ein VArtl.). आत्मनासप्तमो राजा निर्यचौ गजसाह्वयात् MBh. 17, 25. आत्मनापञ्चमं दृष्ट्वा माम् R. 4, 3, 9. 5, 89, 47. ततः प्रविशत्यात्मनातृतीयो वैखानसः ÇĀK. 6, 17. आत्मनाद्वितीयेन मन्त्रः कार्यो महीभृता HIT. III, 37. Nach KĀTJ. zu P. 6, 3, 5 sagt man auch आत्मपञ्चम. Sehr häufig erscheint आत्मन् in der Bedeutung *das Selbst, die eigene Person* am Ende eines adj. comp. nach einem adj.: प्रीतात्मन् M. 1, 60. R. 1, 9, 64. विनीता° M. 7, 39. R. 1, 2, 24. निपता° M. 3, 188. 6, 96. प्रयता° 4, 145. 146. संस्कृता° 10, 110. दुःखपरीता° N. 23, 23. प्रहृष्टा° 21, 25. पाया° R. 1, 1, 32. विपविमुक्ता° N. 20, 25. पुष्पमेधीकृता° MBh. 44. इष्याविप्रुद्धा° RAGH. 1, 68. — 4) *Wesen, Natur, Eigenthümlichkeit* AK. 3, 4, 112. H. 1376. an. 2, 259. MED. n. 38. आत्मा परमस्य नश्यति RV. 10, 97, 11. काव्यस्यात्मा धनिः SĀH. D. 6, 18. Besonders häufig am Ende von adj. comp.: कर्मात्मन् dessen Wesen die That ist M. 1, 22. 53. धर्मात्मन् 8, 3. 12, 2. R. 1, 1, 29. 23, 7. कामात्मन् M. 7, 27. कामात्मता 2, 2. संशया° BHAG. 4, 40. ह्याया° MBh. 41. Häufig erhält ein solches comp. das suff. क (s. आत्मक). — 5) *die Person, die sich im Leib als Einheit darstellt; der Leib im Gegens. zu den Gliedern*: आत्मन्नुपस्ये न वृकस्य लोमं VS. 19, 92. अङ्गान्यात्मान्निष्णा तदश्चिन्नात्मानमैङ्गैः समधात्सरस्वती 93. 12, 4. 20, 7. 10. आत्मा वै यज्ञस्य यजमानो ऽङ्गान्युत्विजः CAT. Br. 9, 5, 2, 16. 12, 2, 2, 6. स वा आत्मानमेव विकृपति न पतपुच्छानि 7, 2, 2, 8. 3, 1, 44. — 6) *Körper* AK. 3, 4, 112. H. an. 2, 258. MED. n. 39. सर्वातिरिक्तसारणा सर्वतेजोऽभिभाविना । स्थितः सर्वाव्रतेनोर्वी क्राह्या मेहुरिवात्मना RAGH. 1, 14. KULL. erklärt ohne Noth आत्मन् durch Körper M. 12, 12: यो ऽस्यात्मनः कारयिता तं क्षेत्रज्ञं प्रचक्षते । यः करोति तु कर्माणि स भूतात्मेच्यते व्युधैः ॥ — 7) *Verstand, Intelligenz*: AK. 3, 4, 112. TRIK. 3, 3, 230. H. an. 2, 258. MED. n. 39. मन्दात्मन् von geringem Verstande N. 15, 13. नष्टात्मा कलिना स्पृष्टस्तद्विगणयन्नपः । जगमिक्ता वने प्रून्ये भार्यामुत्सृज्य दुःखितः 10, 29. — 8) *die Persönlichkeit in ausgezeichnetem Sinne, das höchste persönliche Lebensprincip, Weltseele, Allgeist* (परमात्मन् u. s. w., syn. mit पुरुष) AK.